पत्र सूचना शाखा
(मुख्यमंत्री सूचना परिसर)
सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, उ0प्र0

मुख्यमंत्री गोमती उत्सव–2026 के समापन समारोह में सम्मिलित हुए

विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 15 महानुभावों को गोमती गौरव सम्मान से सम्मानित किया

उत्सव केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं होते, बल्कि परिवार और समाज को एक–दूसरे से जोड़ने, सांस्कृतिक चेतना जागृत करने और सामाजिक सहभागिता बढ़ाने के महत्वपूर्ण अवसर : मुख्यमंत्री

गोमती नदी लखनऊ की आत्मा, इसकी अविरलता और निर्मलता बनाए रखना हमारा दायित्व

गोमती उत्सव को नदी की स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, स्थानीय उत्पादों, लोक कला, लोक परम्पराओं और स्थानीय प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने का प्रभावी मंच बनाया जाना चाहिए

प्रदेश सरकार गोमती नदी को स्वच्छ बनाने के लिए नए एस0टी0पी0 स्थापित कर रही

मुख्यमंत्री ने पर्यावरण संरक्षण के लिए सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने की अपील की

बाजार जाते समय अपने घर से कपड़े का थैला अथवा कैरी बैग लेकर जाएं

प्रधानमंत्री जी के मंत्र 'सबका साथ, सबका विकास' की भावना को आगे बढ़ाते हुए सबके कल्याण और सामूहिक विकास की सोच विकसित की गई

अयोध्या का दीपोत्सव विश्वस्तरीय आयोजन बन चुका, 02 दिनों तक देश और दुनिया में अयोध्या की चर्चा

यदि अयोध्या का दीपोत्सव इसी भव्यता के साथ आगे बढ़ता रहा, तो एक दिन यूनेस्को भी इसे मान्यता प्रदान करेगा

लखनऊ : 15 नवम्बर, 2026

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने कहा कि उत्सव केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं होते, बल्कि परिवार और समाज को एक–दूसरे से जोड़ने, सांस्कृतिक चेतना जागृत करने और सामाजिक सहभागिता बढ़ाने के महत्वपूर्ण अवसर होते हैं। आज कार्तिक शुक्ल षष्ठी अर्थात सूर्य षष्ठी का पावन अवसर है। इस दिन व्रती माताएं–बहनें नदियों, घाटों और सरोवरों के तट पर अस्ताचलगामी भगवान सूर्य को अर्घ्य अर्पित करने के लिए एकत्र होती हैं। इसी पावन अवसर पर गोमती उत्सव का आयोजन भी हो रहा है।

मुख्यमंत्री जी आज यहां केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, गोमती नगर में आयोजित गोमती उत्सव–2026 के समापन समारोह में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। इस अवसर पर

उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 15 महानुभावों को गोमती गौरव सम्मान से सम्मानित किया।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि दुनिया की जितनी भी प्रमुख सभ्यताएं और संस्कृतियां विकसित हुई हैं, उनका उद्भव और विकास किसी न किसी नदी के तट पर हुआ है। नदियों के किनारे ही सभ्यताएं पनपीं, फली–फूलीं और आगे बढ़ीं। भारत में स्थित प्रमुख तीर्थस्थल भी नदियों के तट पर ही विकसित हुए हैं। भारत तीर्थों की भूमि इसलिए है, क्योंकि यहां मानव सभ्यता के उद्गम से लेकर आज तक नदी संस्कृति के महत्व को समझा गया है।

गोमती को आदि गंगा के रूप में जाना जाता है। गोमती नदी लखनऊ की आत्मा है। गोमती की अविरलता और निर्मलता बनाए रखना केवल नदी संरक्षण का विषय नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत और जीवन मूल्यों की रक्षा का भी दायित्व है। गोमती उत्सव को नदी की स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, स्थानीय उत्पादों, लोक कला, लोक परम्पराओं और स्थानीय प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने का प्रभावी मंच बनाया जाना चाहिए। राज्य सरकार इस आयोजन को आगे बढ़ाने में पूरा सहयोग करेगी।

मुख्यमंत्री जी ने लखनऊवासियों और गोमती उत्सव समिति के पदाधिकारियों से गोमती नदी के संरक्षण के लिए सक्रिय सहभागिता का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि लखनऊ से पहले तक गोमती की धारा अविरल और निर्मल दिखाई देती है, लेकिन लखनऊ शहर में प्रवेश करने के बाद नदी की धारा अपना अस्तित्व खोने लगती है। यह स्थिति चिंताजनक है और इसके समाधान के लिए सरकार के साथ समाज को भी आगे आना होगा।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि प्रदेश सरकार गोमती नदी को स्वच्छ बनाने के लिए नए एस0टी0पी0 स्थापित कर रही है। इनमें से अधिकांश संयंत्र बन चुके हैं। नदी में गिरने वाले नालों और सीवर के पानी को टैप करके एस0टी0पी0 तक पहुंचाया जा रहा है, ताकि गंदे पानी को शोधित करने के बाद ही आगे प्रवाहित किया जा सके।

गोमती उत्सव का आयोजन केवल सांस्कृतिक कार्यक्रम तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि इसकी शुरुआत ही गोमती नदी की शुद्धता, अविरलता और निर्मलता के संकल्प के साथ होनी चाहिए। उत्सव नदी के तट पर आयोजित हो और इसके माध्यम से गोमती संरक्षण का व्यापक जन अभियान चलाया जाए। गोमती की अविरलता और निर्मलता भारत की आत्मा की अविरलता और निर्मलता का प्रतीक है। जिस प्रकार गंगा गंगोत्री से गंगासागर तक अपनी विराट धारा के साथ निरन्तर प्रवाहित होती है, उसी प्रकार गोमती की पावन धारा को भी बिना किसी बाधा के आगे बढ़ाने के लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। नदी की पवित्रता और प्राकृतिक प्रवाह बनाए रखना सामूहिक जिम्मेदारी है।

गोमती नदी को लखनऊ के भीतर स्वच्छ और सुंदर बनाना हम सभी का सामूहिक दायित्व है। गोमती लखनऊ की आत्मा है और जब आत्मा शुद्ध एवं सुंदर होगी तो लखनऊ

की प्रगति को कोई रोक नहीं सकता। राजधानी की विकास यात्रा इसी प्रकार निरन्तर आगे बढ़ती रहेगी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि गोमती उत्सव की यह यात्रा अनवरत आगे बढ़ेगी तथा यह आयोजन गोमती नदी के संरक्षण, पर्यावरण जागरूकता, सांस्कृतिक विरासत के संवर्धन, स्थानीय उत्पादों के प्रोत्साहन और सामाजिक सहभागिता का प्रभावी माध्यम बनेगा।

मुख्यमंत्री जी ने पर्यावरण संरक्षण के लिए सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने की अपील की। उन्होंने कहा कि सिंगल यूज प्लास्टिक पर्यावरण, स्वास्थ्य और सुरक्षा तीनों के लिए गम्भीर चुनौती है। तात्कालिक सुविधा के लिए इसका उपयोग करना भविष्य के लिए नुकसानदेह है। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि बाजार जाते समय अपने घर से कपड़े का थैला अथवा कैरी बैग लेकर जाएं। पहले लोग सब्जी और अन्य सामान खरीदने के लिए झोला लेकर जाते थे। उसी परम्परा को फिर से अपनाने की आवश्यकता है। यदि आवश्यकता पड़े तो ऐसे थैलों का उपयोग किया जाए, जो पर्यावरण में स्वयं नष्ट हो सकें।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि प्लास्टिक को इधर–उधर या नदियों में नहीं फेंकना चाहिए। इसे खाने से गाय और अन्य पालतू पशुओं को भी नुकसान पहुंचता है। प्लास्टिक नदी की धारा को अवरुद्ध करता है, वहां जमा होकर पड़ा रहता है और जल को प्रदूषित करता है। यह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है कि लोग पुण्य अर्जित करने के लिए मन्दिर जाते हैं, लेकिन वहां से लौटते समय प्लास्टिक और कचरा फेंककर आते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए। कोई नाला और कोई कचरा पवित्र गोमती नदी में नहीं गिरना चाहिए। इस संकल्प को गोमती उत्सव समिति को अभियान के रूप में आगे बढ़ाना होगा।

मुख्यमंत्री जी ने गोमती उत्सव समिति के पदाधिकारियों और आयोजन से जुड़े लोगों को गोमती उत्सव की बधाई देते हुए कहा कि 08 वर्ष पूर्व जिस आयोजन की परिकल्पना की गई थी, वह आज भव्य स्वरूप ले चुका है। इस आयोजन को और व्यापक स्वरूप देना चाहिए। सरकार इस आयोजन से जुड़ेगी और आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराएगी। सरकार के सहयोग से प्रदर्शनी आयोजित करने में आने वाली किराये जैसी समस्याओं का समाधान भी हो सकेगा। इससे स्थानीय कलाकारों, कारीगरों और उद्यमियों को अपने उत्पाद एवं प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर मिलेगा।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि गोमती उत्सव का आयोजन अपने आप में सुखद और सकारात्मक संदेश दे रहा है। यहां प्रदर्शनी लगी है, लोग परिवार के साथ आ रहे हैं और एक–दूसरे से मिल रहे हैं। उन्होंने वर्तमान सामाजिक जीवन में बढ़ते एकाकीपन और तनाव की चर्चा करते हुए कहा कि आज एक ही घर में रहने वाले परिवार के 04 सदस्य भी अपनी–अपनी दुनिया में व्यस्त हैं। एक ही कमरे में बैठकर चारों अपने स्मार्टफोन में अलग–अलग दिशाओं में व्यस्त रहते हैं। परिवार के सदस्यों के बीच संवाद और सामूहिक

सहभागिता कम होती जा रही है। यही एकाकीपन तनाव और अवसाद का कारण बनता है तथा तनाव और अवसाद आगे चलकर अपराध और अराजकता को जन्म देते हैं।

समाज में सामूहिकता और सकारात्मक सोच को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। वर्ष 2017 से पहले उत्तर प्रदेश में अपराध और अराजकता का वातावरण था, क्योंकि लोगों की सोच सीमित थी और वे व्यापक सामाजिक एवं प्रदेश के हितों के बारे में नहीं सोचते थे। वर्तमान सरकार ने इस सोच को बदलने का प्रयास किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मंत्र 'सबका साथ, सबका विकास' की भावना को आगे बढ़ाते हुए सबके कल्याण और सामूहिक विकास की सोच विकसित की गई है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि वर्ष 2017 से पहले जिस प्रदेश में उपद्रव का वातावरण था, आज वहां उत्सव ही उत्सव दिखाई दे रहे हैं। गोमती उत्सव भी इसी सकारात्मक बदलाव का हिस्सा है। उन्होंने अयोध्या के दीपोत्सव का उल्लेख करते हुए कहा कि वर्ष 2017 से पहले जब अयोध्या में दीपावली के आयोजन की चर्चा हुई, तो पता चला कि वहां कोई विशेष आयोजन नहीं होता था। अयोध्या ने पूरी दुनिया को दीपावली का पर्व दिया, लेकिन उसी अयोध्या में दीपावली पर अंधकार रहता था। इसके बाद सरकार ने दीपोत्सव की परिकल्पना को साकार किया और दीपावली से एक दिन पहले भव्य दीपोत्सव आयोजित करने की परम्परा शुरू की।

आज अयोध्या का दीपोत्सव विश्वस्तरीय आयोजन बन चुका है। 02 दिनों तक देश और दुनिया में अयोध्या की चर्चा होती है। यह अपनी आस्था और उत्सव को वैश्विक पहचान दिलाने का प्रभावी माध्यम है। यदि अयोध्या का दीपोत्सव इसी भव्यता के साथ आगे बढ़ता रहा तो एक दिन यूनेस्को भी इसे मान्यता प्रदान करेगा। किसी परम्परा को वैश्विक मान्यता तभी मिलती है, जब उसके साथ लोक आस्था, लोक परम्पराएं और आमजन की सहभागिता जुड़ी होती है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि भारत आस्था का देश है। यहां खानपान, रूप–रंग, रहन–सहन और वेशभूषा में विविधता है, लेकिन देश की सांस्कृतिक और राष्ट्रीय भावना एक है। उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक भारतवासियों की भाव–भंगिमा एक है। कश्मीर से तमिलनाडु, अरुणाचल प्रदेश से गुजरात तक प्रत्येक नागरिक एक भारत, श्रेष्ठ भारत और सुरक्षित भारत की कामना करता है। उत्सव और सांस्कृतिक आयोजन इसी राष्ट्रीय एकात्मता तथा सामाजिक जागरूकता को मजबूत करने के महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रदेश के स्थानीय उत्पादों और कारीगरों को प्रोत्साहित करने के लिए 'एक जनपद–एक उत्पाद' योजना शुरू की है। अच्छी सरकारें अपने कलाकारों, हस्तशिल्पियों और कारीगरों के लिए अवसर उपलब्ध कराती हैं।

पिछली सरकार ने प्रदेश को 'एक जनपद–एक माफिया' दिया था, जबकि वर्तमान सरकार ने 'एक जनपद–एक उत्पाद' की पहचान दी है।

खानपान की विविधता और स्थानीय व्यंजनों को प्रोत्साहित करने के लिए 'एक जनपद–एक व्यंजन' की पहल की गई है। हाल ही में आयोजित एक कार्यक्रम में उन्होंने देखा कि प्रदेश के प्रत्येक जनपद में अलग–अलग विशिष्ट व्यंजन हैं। गोमती उत्सव में भी इन व्यंजनों को स्थान मिलना चाहिए, ताकि लोग अपने परिवार के साथ आएं, स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लें और उनकी विशेषताओं के बारे में जानें। स्थानीय व्यंजनों की गुणवत्ता और शुद्धता की गारण्टी सुनिश्चित की जानी चाहिए। लोगों के साथ किसी प्रकार की धोखाधड़ी नहीं होनी चाहिए। इस आयोजन को स्थानीय खानपान और पारंपरिक पाक कला के प्रचार–प्रसार का प्रभावी मंच बनाया जा सकता है।

मुख्यमंत्री जी ने खाद्य पदार्थों के वैश्विक बाजार की सम्भावनाओं का उल्लेख करते हुए नेस्ले जैसी बड़ी खाद्य कम्पनी का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि दुनिया में खाद्य पदार्थों की आपूर्ति करने वाली बड़ी कम्पनियां व्यापक कारोबार कर रही हैं। हमारे यहां प्रत्येक घर और प्रत्येक घर की माताएं–बहनें अपने पारम्परिक व्यंजनों के माध्यम से एक बड़ी खाद्य कंपनी की तरह क्षमता रखती हैं। वे इतने स्वादिष्ट और विशिष्ट व्यंजन तैयार कर सकती हैं कि दुनिया उनकी मांग करे। आवश्यकता इन पारम्परिक व्यंजनों को पहचान देने, उनकी गुणवत्ता सुनिश्चित करने और उन्हें व्यापक बाजार उपलब्ध कराने की है। गोमती उत्सव इस दिशा में एक प्रभावी मंच बन सकता है। यहां स्थानीय व्यंजनों को प्रदर्शित किया जाए, लोग उन्हें चखें और उनके निर्माण की विधि तथा विशेषताओं को भी जानें। इससे स्थानीय परिवारों, विशेषकर महिलाओं की प्रतिभा को अवसर मिलेगा और पारम्परिक खानपान को नई पहचान प्राप्त होगी।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि गोमती उत्सव में स्थानीय कारीगरों के हुनर और हस्तशिल्पियों की प्रतिभा को सम्मान दिया जाना चाहिए। गोमती नदी के संरक्षण के लिए उल्लेखनीय कार्य करने वाले लोगों को सम्मानित किया जाना चाहिए। इसी प्रकार लखनऊ की लोक कला, लोक परम्परा और लोक गाथाओं को आगे बढ़ाने वाले कलाकारों को भी उचित मंच और सम्मान मिलना चाहिए। युवाओं और समाज के विभिन्न वर्गों के लिए कुछ नया तथा लीक से हटकर कार्य करने वाले लोगों को भी इस आयोजन में सम्मानित किया जाना चाहिए। ऐसे प्रयासों से समाज में सकारात्मक प्रतिस्पर्धा विकसित होगी और दूसरे लोग भी बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरित होंगे।

कार्यक्रम को गोमती उत्सव आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री रामकृष्ण यादव, परिकल्पक श्री सर्वेश अस्थाना तथा मुख्य संरक्षण श्री राजीव मिश्र ने भी सम्बोधित किया।

————————